करेंट अफेयर्स 20 जुलाई 2022

वैज्ञानिकों ने काराकोरम विसंगति के मामले को हल किया

सिलेबस: जीएस पेपर-I (भौगोलिक विशेषताएं)

संदर्भ: वैज्ञानिकों के एक समूह ने एक सिद्धांत निर्धारित किया है कि मध्य-दक्षिण एशिया के काराकोरम रेंज में ग्लेशियर दूसरों की तरह जलवायु परिवर्तन से प्रभावित क्यों नहीं हुए हैं।

काराकोरम विसंगति के बारे में

- **काराकोरम विसंगति (केए)** हिमालय की निकटवर्ती पर्वत श्रृंखलाओं के साथ-साथ दुनिया की अन्य पर्वतीय श्रृंखलाओं में ग्लेशियरों के पीछे हटने के विपरीत **मध्य काराकोरम में ग्लेशियरों की स्थिरता या असामान्य वृद्धि** है।
- हाल ही के एक अध्ययन ने **ग्लोबल वार्मिंग के कारण ग्लेशियल पिघलने** का विरोध करने के रूप में काराकोरम रेंज में ग्लेशियरों के कारणों की व्याख्या करने के लिए एक नया सिद्धांत प्रस्तुत किया है।
- जबकि पिछले अध्ययनों ने विसंगति को स्थापित करने और बनाए रखने में **तापमान की भूमिका** पर प्रकाश डाला, यह पहली बार है कि **विसंगति को खिलाने में वर्षा के प्रभाव को** उजागर किया गया है।

काराकोरम विसंगति के कारण

- **अमेरिकन मौसम विज्ञान सोसायटी के जर्नल ऑफ क्लाइमेट** में प्रकाशित एक पेपर में, समूह ने दावा किया कि **पश्चिमी विक्षोभ के हालिया पुनरुद्धार ने 21 वीं सदी के आगमन के बाद से काराकोरम विसंगति को ट्रिगर करने और बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।** अध्ययन को विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के जलवायु परिवर्तन कार्यक्रम द्वारा समर्थित किया गया था।
- WDs सर्दियों के दौरान क्षेत्र के लिए बर्फबारी का प्राथमिक फीडर हैं। वे कुल मौसमी बर्फबारी की मात्रा का लगभग 65% और कुल मौसमी वर्षा का लगभग 53% का गठन करते हैं, जिससे उन्हें आसानी से नमी का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत बना दिया जाता है।
- **काराकोरम के कोर ग्लेशियर क्षेत्रों में बर्फबारी की मात्रा के संदर्भ में डब्ल्यूडी के योगदान में हाल के दशकों में लगभग 27% की वृद्धि हुई है,** जबकि गैर-डब्ल्यूडी स्रोतों से प्राप्त वर्षा में लगभग 17% की कमी आई है।

- काराकोरम हिमालय पर **डब्ल्यूडी से जुड़ी शीतकालीन वर्षा** इसके उद्भव के पीछे प्रमुख ड्राइवरों में से एक है।

HINDU-KUSH-Himalayan (HKH) क्षेत्र के बारे में

एचकेएच क्षेत्र **अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, चीन, भारत, किर्गिस्तान, मंगोलिया, म्यांमार, नेपाल, पाकिस्तान, ताजिकिस्तान और उज्बेकिस्तान** तक फैला हुआ है।

- यह लगभग 5 मिलियन वर्ग किलोमीटर की दूरी तय करता है और एक बड़ी और सांस्कृतिक रूप से विविध आबादी की मेजबानी करता है।
- इसे **तीसरा ध्रुव (उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों** के बाद) माना जाता है, और जलवायु के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ हैं।
- इसमें विशाल क्रायोस्फेरिक क्षेत्र शामिल हैं और **ध्रुवीय क्षेत्र के बाहर बर्फ और बर्फ का दुनिया का सबसे बड़ा भंडार** भी है।

न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP), प्राकृतिक खेती और फसल विविधीकरण पर पैनल

पाठ्यक्रम: जीएस पेपर-III (प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कृषि सब्सिडी, एमएसपी से संबंधित मुद्दे)

सरकार ने **न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) के मुद्दों की जांच के लिए पूर्व केंद्रीय कृषि सचिव संजय अग्रवाल की** अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया।

पृष्ठभूमि

सरकार ने तीनों कृषि कानूनों को रद्द करने के फैसले की घोषणा की थी और कहा था कि वह शून्य बजट आधारित खेती को बढ़ावा देने, देश की बदलती जरूरतों को ध्यान में रखते हुए फसलों के पैटर्न में बदलाव करने और एमएसपी को अधिक प्रभावी और पारदर्शी बनाने के लिए एक समिति का गठन करेगी।

सदस्यों

इस समिति में केंद्र और राज्य सरकारों के **प्रतिनिधि**, किसान, कृषि वैज्ञानिक और कृषि अर्थशास्त्री शामिल होंगे। समिति में 26 सदस्य हैं।

समिति के उद्देश्य

- **कृषि विपणन प्रणाली पर:** यह देश की बदलती आवश्यकताओं के अनुसार कृषि विपणन के लिए काम करेगा ताकि घरेलू उत्पादन और निर्यात का लाभ उठाकर किसानों को उनके उत्पाद के लाभकारी मूल्यों के **माध्यम** से उच्च मूल्य सुनिश्चित किया जा सके।
- **प्राकृतिक खेती पर:** यह भारतीय **प्राकृतिक** खेती प्रणाली के तहत क्षेत्र विस्तार के लिए भविष्य की जरूरतों और समर्थन के लिए मूल्य श्रृंखला विकास, प्रोटोकॉल **सत्यापन** और अनुसंधान के लिए कार्यक्रमों और योजनाओं का सुझाव देगा।

ज् **फसल विविधीकरण पर:** यह **उत्पादक** और उपभोक्ता राज्यों के कृषि-पारिस्थितिक क्षेत्रों के मौजूदा फसल पैटर्न के मानचित्रण पर विचार करेगा।

- **सूक्ष्म सिंचाई योजना की समीक्षा और सुझाव।**

MSP के बारे में

- एमएसपी वह दर है **जिस पर सरकार किसानों से फसलों की खरीद करती है, और यह किसानों द्वारा किए गए उत्पादन की लागत के कम से कम डेढ़ गुना की गणना पर आधारित है।**

एमएसपी किसी भी फसल के लिए एक "**न्यूनतम** मूल्य" है जिसे सरकार किसानों के लिए लाभकारी मानती है और इसलिए "समर्थन" के योग्य है।

भारत में MSP व्यवस्था का विकास

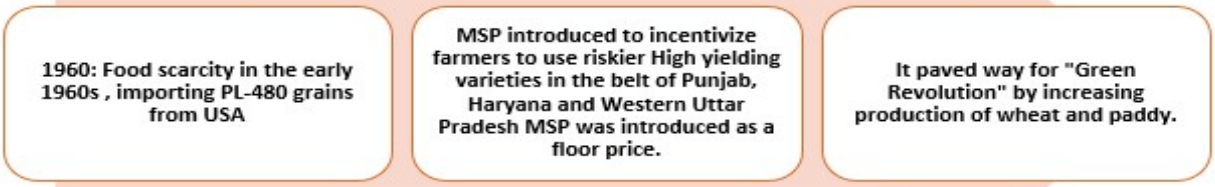

MSP के तहत फसलें

- 7 प्रकार के अनाज (धान, गेहूं, **मक्का**, बाजरा, ज्वार, रागी और जौ)।
- दालों के 5 प्रकार (चना, अरहर / तुअर, उड़द, मूंग और मसूर)।
- 7 तिलहन (रेपसीड-सरसों, मूंगफली, सोयाबीन, सूरजमुखी, सेसमम, कुसुम, नाइजरसीड)।
- 4 वाणिज्यिक फसलें (कपास, **गन्ना**, खोपरा, कच्चा जूट)।

इसके अतिरिक्त, तोरिया और डी-भूसी वाले नारियल के न्यूनतम समर्थन मूल्य क्रमश रेपसीड/सरसों और खोपरा के न्यूनतम समर्थन मूल्य के आधार पर निर्धारित किए जाते हैं।

MSP की आवश्यकता

- संकट की बिक्री से किसानों का समर्थन करें।
- सार्वजनिक वितरण के लिए खाद्यान्न की खरीद

ज् किसानों को बाजार मूल्य में उतार-चढ़ाव से बचाने के लिए।

- बाजार में अनाज की एक स्वस्थ आपूर्ति बनाए रखें जिससे भूख के खिलाफ लड़ाई में मदद मिलती है।

ज् फसलों और सुनिश्चित बाजारों के लिए गारंटीकृत मूल्य उच्च निवेश और आधुनिक कृषि पद्धतियों को अपनाने को प्रोत्साहित करता है।

प्रारंभिक परीक्षा मुख्य तथ्य

डिजी यात्रा परियोजना

- यह नागर विमानन मंत्रालय के अधीन एक परियोजना है, जिसकी परिकल्पना **चेहरे की पहचान प्रौद्योगिकी (एफआरटी) पर आधारित हवाई अड्डों पर यात्रियों के संपर्क रहित, निर्बाध प्रसंस्करण को प्राप्त करने के** लिए की गई है।

परियोजना की परिकल्पना की गई है कि कोई भी यात्री एक पेपरलेस और कॉन्टैक्टलेस प्रोसेसिंग के माध्यम से हवाई अड्डे पर विभिन्न चौकियों से गुजर सकता है, पहचान स्थापित करने के लिए चेहरे की विशेषताओं का उपयोग कर सकता है जिसे बोर्डिंग पास से जोड़ा जाएगा।

यह **एक विकेंद्रीकृत मोबाइल वॉलेट-आधारित पहचान प्रबंधन मंच** प्रदान करता है जो लागत प्रभावी है और डिजी यात्रा के कार्यान्वयन में गोपनीयता / डेटा सुरक्षा के मुद्दों को संबोधित करता है।

- डिजी यात्रा **केंद्रीय पारिस्थितिकी तंत्र** बनाने के उद्देश्य से डिजी यात्रा फाउंडेशन (डीवाईएफ) को एक संयुक्त उद्यम कंपनी के रूप में स्थापित किया गया है।

नमस्ते योजना

- **आवास और शहरी कार्य राज्य मंत्री** ने सीवरों और सेप्टिक टैंकों की सफाई **के लिए मशीनीकृत स्वच्छता पारिस्थितिकी तंत्र** (एनएएमएएसटीई) योजना के लिए एक राष्ट्रीय कार्य योजना तैयार की है।
- इसका उद्देश्य भारत में स्वच्छता कार्य में शून्य मौतों जैसे परिणामों को प्राप्त करना है, कोई भी सफाई कर्मचारी मानव मल पदार्थ के सीधे संपर्क में नहीं आता है और सभी सीवर और सेप्टिक टैंक सफाई कर्मचारियों को वैकल्पिक आजीविका तक पहुंच है।
- **नोडल मंत्रालय:** पेयजल और स्वच्छता विभाग, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय और आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय।

सन्नाती

- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने अब **कलबुर्गी के पास इस महत्वपूर्ण बौद्ध स्थल** पर संरक्षण कार्य शुरू कर दिया है।
- यह कलबुर्गी जिले में कानागनहल्ली के पास भीमा नदी के तट पर एक प्राचीन बौद्ध स्थल है।
- कंगानहल्ली खुदाई ने कई चमत्कारों को खोला: शानदार महा स्तूप, जिसे शिलालेखों में **अधोलोक महा चैत्य (नीदरलैंड का महान स्तूप) के** रूप में संदर्भित किया गया था और अधिक महत्वपूर्ण रूप से; सम्राट अशोक का पत्थर का चित्र, उनकी रानियों और महिला परिचरों से घिरा हुआ था, जिसे मौर्य सम्राट की एकमात्र जीवित छवि माना जाता था, जिस पर ब्राह्मी में **'राया असोको'** शिलालेख था।

काला AZAR

- कालाजार या **आंत लीशमैनियासिस एक प्रोटोजोआ परजीवी रोग है, जो सैंडफ्लाई के काटने से फैलता है।**
- सैंडफ्लाई भूरे रंग की होती हैं और उनके शरीर पर बाल होते हैं। मक्खियां परजीवी से संक्रमित होती हैं **जिसे 'लीशमैनिया डोनोवानी' कहा जाता है।**
- यह बीमारी कुछ सबसे गरीब लोगों को प्रभावित करती है और **कुपोषण, जनसंख्या विस्थापन, खराब आवास, एक कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली और वित्तीय संसाधनों की कमी से जुड़ी हुई है।**

- लीशमैनियासिस भी डब्ल्यूएचओ (विश्व स्वास्थ्य संगठन) के अनुसार, वनों की कटाई और शहरीकरण जैसे पर्यावरणीय परिवर्तनों से जुड़ा हुआ है।
- यह बीमारी **बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल** में स्थानिक है।
- कई दिनों में बुखार के अनियमित मुकाबलों, वजन घटाने, प्लीहा और जिगर की वृद्धि, और एनीमिया ज्ञात लक्षण हैं। त्वचा पैच में सूखी, पतली और पपड़ीदार हो सकती है और बाल खो सकते हैं। हल्के त्वचा टोन वाले लोगों में, हाथों, पैरों, पेट और चेहरे की त्वचा का भूरा मलिनकिरण देखा जा सकता है, यही कारण है कि बीमारी को **"काला बुखार"** भी कहा जाता है।
- सरकार का लक्ष्य 2015 तक भारत में इस बीमारी को खत्म करना था, लेकिन उस समय सीमा को याद किया गया था। तथापि, **राष्ट्रीय कालाजार उन्मूलन कार्यक्रम** के माध्यम से मामलों की संख्या में काफी कमी लाई गई है।

RACE IAS